गन्ने के फसल में लगने वाले प्रमुख कीट व उनका नियंत्रण

कृषि कुंभ (मार्च, 2023),
खण्ड 02 भाग 10, पृष्ठ संख्या 57–58

गन्ने के फसल में लगने वाले प्रमुख कीट व उनका नियंत्रण

प्रदीप कुमार वर्मा[1], अंकित राय[2], आकांक्षा[3], विशाल श्रीवास्तव[4], नवीन कुमार[5]

[1]शोध छात्र, पादप रोग विज्ञान विभाग, [2] एम. एससी. कृषि कीट विज्ञान विभाग, [3]शोध छात्रा, कृषि कीट विज्ञान विभाग, [4]शोध छात्र, पुष्प विज्ञान विभाग, सरदार वल्लभ भाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ, उत्तर प्रदेश 250110

[5]सहायक प्राध्यापक, कीट विज्ञान विभाग, नेशनल पोस्ट ग्रैजुएट कॉलेज बड़हलगंज, गोरखपुर उत्तर प्रदेश 273402, भारत।

Email Id: vermabhai271302@gmail.com

परिचय–

विश्व में लगभग 110 देशों में चीनी का उत्पादन गन्ना व चुकंदर द्वारा किया जाता है। गन्ना उपोष्ण देशों में उगाई जाने वाली फसल है। भारत में केवल गन्ने से ही चीनी का निर्माण होता है। गन्ने के क्षेत्रफल में भारत विश्व में प्रथम परंतु उत्पादन में द्वितीय स्थान पर है। यह एक नकदी फसल है और इसकी खेती लगभग 28 से 30 लाख हेक्टेयर भूमि पर की जाती है। इस फसल में अनेक कीट लगते हैं जिनका यदि उचित प्रबंध ना किया जाए तो फसल की पैदावार में भारी कमी देखी जा सकती है। आइए जानते हैं गन्ने में लगने वाले प्रमुख कीट वह उनके **उचित नियंत्रण के बारे में -**

(1) दीमक -

दीमक यह कम सिंचाई वाली हल्की भूमि वाली मृदाओं में पाया जाता है। यह गन्ने की बोई हुई आंखों के अंकुरण को प्रभावित करता है और बाद में पोरियों में सुरंग बनाकर छेद कर देता है जिनमें बाद में मिट्टी भरी हुई देखी जा सकती है। इससे फसल को लगभग 35 से 40 प्रतिशत तक क्षति पहुंचती है हल्की इसका प्रकोप पूरे वर्ष रहता है परंतु गर्मियों में इसका प्रकोप अत्यधिक बढ़ जाता है।

नियंत्रण -

क्लोरोपयरीफॉस 20 ईसी को 5 लीटर प्रति हेक्टेयर या वाइफेन्थ्रिन 400 मिलीलीटर को 2 से 3 लीटर पानी में घोलकर रेत मिलाकर पौधों के पास डालने व हल्की सिंचाई करें।

(2) कुंडल कीट (व्हाइट ग्रब) -

यह कीट अनेक फसलों में लगता है, खेत में कच्चा खाद डालने से इसका प्रकोप अधिक बढ़ जाता है। इसके द्वारा जड़ों को खाए जाने के कारण पत्तियां पीली पर सूखने लग जाती हैं। इसका प्रकोप मई से अगस्त माह में अत्यधिक होता है।

नियंत्रण -

खेत में नमी बनाए रखें व वाइफेन्थ्रिन 400 मिलीलीटर को 2 से 3 लीटर पानी में घोलकर रेत

में मिलाकर पौधों के पास छिड़काव करें व सिंचाई करें। जैविक रोकथाम हेतु बेवेरिया बेसियाना 5 किलो पके खाद में मिलाकर पौधों के पास मिट्टी में मिला दें।

(3) पायरिल्ला -

पत्तियों से रस चूस कर गन्ने की फसल को नुकसान पहुंचाने वाला प्रमुख कीट है। इसका प्रकोप

प्रायः अक्टूबर माह के अंत तक रहता है। यह कीट पत्तियों पर लसलसा सा पदार्थ छोड़ता है, जिस पर काली फफूंद उग आती है फलस्वरूप प्रकाशसंश्लेषण क्रिया भी बाधित होती है। इससे उत्पादकता में लगभग 15 से 20 प्रतिशत कमी आती है व चीनी की मात्रा पर भी असर पड़ता है।

नियंत्रण -

इसका नियंत्रण जैविक नियंत्रण विधि से भी संभव है। इसके लिए एप्रिकेनियां के तीन से चार लाख अंडे या 5000 से 6000 सुंडीया प्रति हेक्टेयर प्रकोप ग्रस्त फसल पर छोड़े। वर्षा ना हो तो सिंचाई कर नमी बनाए रखें व अत्यधिक प्रकोप होने पर क्वीनलफास 25 प्रतिशत 800 मिलीलीटर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें।

(4) अग्र तना छेदक -

फसल के बोने के उपरांत अंकुरण के बाद जैसे–जैसे तापक्रम बढ़ता है, इस कीट का प्रकोप बढ़ने लगता है। गर्मी की बुवाई में

इसका प्रकोप सर्वाधिक होता है। इसकी इल्ली मुलायम तने में सतह से छेद का प्रवेश करती है, जिससे पोई

सूख जाती है। इस कीट के प्रकोप होने से उपज व शर्करा दोनों प्रभावित होती है।

नियंत्रण -

इससे ग्रसित पौधों को काटकर निकाल देना चाहिए। देर से बुवाई करने पर फोरेट (दाने के रूप) में 25 किलो प्रति हेक्टेयर डालकर पानी देते रहना चाहिए। स्पर्श कीटनाशक जैसे क्वीनलफॉस , क्लोरोपायरीफॉस का छिड़काव भी प्रकोप को कम करता है।

(5) शीर्ष तना छेदक -

फसल की पूरी तरह से बढ़ जाने पर इस कीट का प्रकोप दिखाई देता है हालांकि यदि प्रकोप ज्यादा हो तो किसी अवस्था पर इसका प्रकोप दिख जाता है। यह ऊपर के अधखुलि पत्तीयों से प्रवेश कर नीचे की तरफ खेत बनाते हुए गोप तक पहुंच जाता है और बढ़वार बिंदु को नष्ट कर देता है। जब ऊपर ही खुलती पत्तियों पर एक लाइन में कई छेद नजर आए तो यह इसकी का मुख्य पहचान है।

नियंत्रण -

ट्राईकोकार्ड का प्रयोग करें व अच्छी प्रयोगशाला से लें, लाइट ट्रैप का भी प्रयोग असरकारी होता है। गन्ने पर मिट्टी अवश्य चढ़ाएं। कार्बोफ्यूरान (3जी) वर्षा शुरू होते ही नमी में गन्ने के पास डालें या सिंचाई करके डालें।